उराँव जनजाति में शैक्षणिक विकास : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्रिंयका कुमारी
शोध छात्रा, एम.ए. समाजशास्त्र, एम. फिल, यू.जी.सी, नेट
स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, रांची विश्वविद्यालय रांची

मानव संसाधनों के विकास का प्रमुख उत्प्रेरक शिक्षा है। शिक्षा से अभिप्राय मानव में उन सभी भौतिक, बौधिक एवं नैतिक पक्षों के विकास से है, जो उसके सम्पूर्ण समाज तथा पर्यावरण के साथ अनुकूलन के लिए आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य केवल मानव का व्यक्तिगत विकास करना ही नहीं है, बल्कि मानवीय व्यक्तित्व का इस रूप में विकास करना है जिसके आधार पर सम्पूर्ण समाज का विकास हो सके। (वर्मा, 2008 : 207)

शिक्षा की महत्ता को दुर्खिम, हर्बट स्पेन्सर, ब्राऊन, रूसेक जैसे समाजशास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है। दुर्खीम ने शिक्षा की प्रकृति और इसके उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''शिक्षा अधिक आयु के लोगों के द्वारा ऐसे लोगों के प्रति किया जाने वाला कार्य है, जो अभी सामाजिक जीवन में प्रवेश करने के योग्य नहीं हैं। इसका उद्देश्य बच्चों में उन भौतिक, बौधिक एवं नैतिक विशेषताओं का विकास करना है, जो उनके लिए सम्पूर्ण समाज और पर्यावरण से अनुकूलन करने के लिए आवश्यक है।'' (वर्मा, 2009 :122)

कोई समाज विकास के किस स्तर पर है, यह बात वहाँ के लोगों के शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा सामाजिक–आर्थिक प्रगति का सूचक है। लोगों की शिक्षा पर समाज व देश का भाग्य निर्भर करता है। शिक्षा मनुष्य को समाज का एक उपयोगी अंग बनाने की प्रक्रिया है। इसका प्रमुख कार्य मनुष्य के जीवन के विभिन्न पक्षों यथा बौधिक, भावातमक, सामाजिक शारीरिक आदि का समुचित विकास करना है। इस दृष्टि से शिक्षा को चहुँमुखी विकास की प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। शिक्षा को हम दो रूपों में समझ सकते हैं :– i) शिक्षा का संकुचित रूप–जब बच्चा औपचारिक कक्षाओं में, निश्चित समय में, निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर उनके परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके सीखता है, तब उसे औपचारिक शिक्षा कहते हैं। यही शिक्षा का संकुचित अथवा सीमित अर्थ है। तथा ii) शिक्षा का व्यापक रूप–मनुष्य जन्म से अन्त तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। वह क्षण–प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता है। जिससे उसका दिन–प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता रहता है जिससे उसका दिन–प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र–पत्रिकाओं, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट आदि से होता है। इस प्रकार का सीखना अनौपचारिक सीखना कहलाता है। तथा यह शिक्षा का व्यापक अथवा विस्तृत अर्थ है। शिक्षा की परिभाषा देते हुए महात्मा गाँधी ने कहा है– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे व मनुष्य के भीतर, मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगिण विकास करना है।'' (मदन, 2007 : 351, 352) शिक्षा के महत्व के संबंध में डॉ०ए०एस०अल्तेकर के कथानुसार, ''शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना गया है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तन करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''(सिंह, 2014:113)

जनजाति

जनाति निश्चित क्षेत्र में निवास करने वाला वैसा समूह है जिसकी अपनी एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषता होती है। इनकी अपनी एक विशिष्ट भाषा तथा जीवन शैली होती है तथा यह अन्तर्विवाही होते हैं। (महाजन, 2009 : 55, 56)

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में जनजातीय जनसंख्या 83.58 मिलियिन है। वर्तमान में भारतीय संविधान में 698 जनजातियाँ अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्य है। भारत की जनजातियाँ पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से एक–दूसरे से भिन्न हैं।

झारखण्ड राज्य की 2001 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की कुल आबादी 7,087,068 (पुरूष 3,565,960 तथा महिला 3,521,108) है जो झारखण्ड राज्य की कुल आबादी का

26.30% है। 2001 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड की 91.72% जनजातीय आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। 2001 की जनगणना के अनुसार राँची जिला में 41.80% आबादी अनुसूचित जनजातियों की है। जिनमें उराँव जनजाति की कुल आबादी 13,90,459 (पुरूष 6,98,059 तथा महिला 6,92,400) है। (वर्मा, 2009 : 12–14)

उराँव जनजाति में शैक्षिक संस्था के रूप में युवागृह

चूँकि शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों रूपों को विद्वानों ने व्यक्त किया है, इस दृष्टकोण से यदि उनकी परिभाषाओं को स्वीकार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि जनजातियों के बीच ऐसी संस्था का अस्तित्व रहा है, जो परम्परागत रूप से जनजातीय बच्चों व युवाओं को शिक्षा देने का कार्य करती रही है। जिसे युवागृह या युवाशयनगार के रूप में जाना जाता है। (वर्मा, 2009 : 123)

प्रसिद्ध मानवशास्त्री एलविन के अनुसार युवागृह की उत्पत्ति का मुख्य कारण जनजातीय समाज के युवा पीढ़ी को जीवन–साथी चयन करने का अवसर प्रदान करना तथा यौन–शिक्षा देना रहा होगा। लेकिन उनके इस मत को हट्टन, मजुमदार तथा राय ने अस्वीकार कर दिया। इन विद्वानों के अनुसार युवागृह की उत्पत्ति का कारण जनजातीय युवा पीढ़ियों में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, जादुई तथा राजनीतिक क्रियाकलापों का प्रशिक्षण देना रहा होगा। (पाण्डेय, 2007 : 303)

उराँव जनजाति के बीच युवागृह को स्थानीय भाषा में धुमकुरिया कहा जाता है। झारखण्ड के जनजातीय समाज में औपचारिक शिक्षा अपेक्षाकृत एक नवीन अवधारणा है, किन्तु अनौपचारिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया के रूप में साक्षरता–पूर्व जनजातीय जीवन को प्रभावित करता रहा है। झारखण्ड की उराँव जनजातियों के बीच धुमकुरिया के रूप में युवाशयनगार की परम्परा रही है। जिनका अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र के रूप में अपना विशिष्ट महत्व रहा है। ये युवाशयनगार नृत्य, संगीत, ललितकला, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक शिक्षा का महत्वपूर्ण परम्परागत शैक्षणिक केन्द्र थे, जिनका जनजातीय युवक–युवतियों के व्यक्तित्व को उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुरूप ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका हुआ करती थी। (वर्मा, 2008 : 208)

जनजातीय गाँव में सरकार, आदिम जनजाति सेवा मंडल तथा अन्य स्वंय सेवी संस्थाओं द्वारा विद्यालय खोला जाना एवं उराँव जनजातियों के बीच उत्पन्न संस्कृति–संक्रमण की प्रक्रिया ने धुमकुरिया को काफी नुकसान पहुँचाया। वर्तमान समय में धुमकुरिया बिलकुल ही विलुप्त हो गया है। किसी–किसी गांव में धुमकुरिया के अवशेष मात्र बचे हैं, जिसके अंतर्गत पहले जैसे क्रियाकलाप नहीं होते। नगरीकरण, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने इनके परम्परागत शिक्षा केन्द्र को ध्वस्त कर दिया है। (वर्मा, 2009 : 124, 129–130)

उराँव जनजाति में शैक्षणिक विकास

झारखण्ड के जनजातीय जीवन में औपचारिक शिक्षा का शुभारंभ ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्ति के संरक्षण में जर्मन मिशनरियों द्वारा किया गया। सर्वप्रथम 2 नवम्बर 1845 को चार जर्मन मिशनरियाँ झारखण्ड के राँची में पहुँचे, जिन्होंने यहाँ की जनजातियों के बीच प्रवचन, विद्यालय कार्य तथा स्वास्थ्य सेवा के लिए अपना मिशन कार्य प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम गोस्सनर इवेनजेलिकल लुथरेन चर्च मिशन द्वारा राँची में एक विद्यालय की नींव डाली गयी। 1864 ई. के अन्त तक ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा छोटानागपुर के विभिन्न क्षेत्रों में 11 विद्यालयों की स्थापना की जा चुकी थी। 1871–72 तक राँची के लड़कों तथा लड़कियों के लिए पृथक रूप से एक–एक आवासीय विद्यालय की स्थापना की जा चुकी थी। गोस्सनर मिशन के 1874 के वाषिक प्रतिवेदन के अनुसार 1874 तक राँची के अलावे राँची जिले के 62 गाँवों में मिशन विद्यालय संचालित थे, जिसके अंतर्गत 1,314 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। राँची में गोस्सनर उच्च विद्यालय की स्थापना 1896ई. में की गयी जो कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबंध था। (वर्मा, 2008 : 208)

एल.पी.जी. मिशन, रोमन कैथोलिक मिशन, स्कॉटलैण्ड के यूनाइटेड फ्री चर्च, डूबलिन यूनिवर्सिटी मिशन तथा सेवेन्थ डे एडवेन्टिस्ट का झारखण्ड की जनजातियों के बीच शिक्षाा प्रसार के संदर्भ में महत्वपूर्ण योगदान रहा। 7 जुलाई 1944ई. को रोमन कैथोलिक मिशन द्वारा राँची में इन्टरमीडियट

कॉलेज के रूप में 130 विद्यार्थियों के साथ सेंट जेवियर कॉलेज की स्थापना की गई थी। 1948 में इस कॉलेज में स्नातक (कला) स्तर की पढ़ाई धीरे–धीरे प्रारम्भ की गयी। यहाँ हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, भौतिकी तथा रसायन में प्रतिष्ठा स्तर तक की पढ़ाई धीरे–धीरे प्रारम्भ की गयी। 1970ई. में सेंट जेवियर कॉलेज में लगभग 2500 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। 1898 ई.में रेव तथा मिस्ट्रेल ओ कॉटर्नर द्वारा राँची में सेंट माईकल अंध विद्यालय की स्थापना की गयी थी, जिसके अंतर्गत नेत्रहीन युवक–युवतियों को बाँस की दस्तकारी तथा बेंत की कुर्सियाँ बनाना सिखाया जाता था। बाद में यहाँ बुनाई, सिलाई तथा कास्तकारी का भी प्रशिक्षण दिया जाने लगा। ईसाई मिशनरियों का झारखण्ड की जनजातियों को साक्षर बनाने तथा उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ईसाई मिशनरियों द्वारा जनजातीय क्षेत्र में विद्यालय खोलने का मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था, किन्तु इस संदर्भ में ईसाई मिशनरियों द्वारा झारखण्ड के जनजातीय भाषा तथा संस्कृति का भी अध्ययन कर परोक्ष रूप में जनजातीय साहित्य की समृद्धि हेतु प्रयास करना पड़ा। 1868ई. में रेव हॉन ने कुरूख शब्दकोष का निर्माण किया। फ्लेक्स द्वारा रचित उराँव व्याकरण तथा शब्दकोष काफी लोकप्रिय हुए। उन्होंने कुरूख वर्णमाला तैयार कर करूख भाषा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 23 नवम्बर 1885 को रोमन कैथोलिक मिशन का फादर कांस्टेन्ट लिवेन्स नामक एक धर्म प्रचारक छोटानागपुर आया, जिसकी नीति छोटानागपुर से निरक्षरता दूर करनी थी। 1886 तक इस मिशन द्वारा 30 विद्यालय चलाये जा रहे थे, जिसकी संख्या 1888ई. तक बढ़कर 77 हो गई थी। जिसमें 2400 बच्चों का दाखिला दिया गया था। 25 मार्च 1887 को सेंट जॉन विद्यालय की आधारशिला रखी गयी थी। बेल्जियम को चार लॉरेटो बहनों का एक दल 21 मार्च 1890 को राँची पहुँचा जिसने एक वर्ष के अन्दर एक बालिका विद्यालय की स्थापना की। (वर्मा, 2009 : 134) जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस शिक्षा ने झारखण्ड के आदिवासियो को केवल साक्षर ही नहीं बनाया, अपितु यह उनके जीवन स्तर को भी ऊँचा उठाने में काफी मददगार साबित हुई है। ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रदत्त शिक्षा ने उन्हें सरकारी नौकरियों तथा अन्यत्र आजीविका तलाशने में सार्थक भूमिका निभायी है। जनजातीय नेतृत्व को भी मिशनरी शिक्षा ने एक नई दिशा प्रदान किया।

परिणामतः जनजातीय जीवन में परिवर्तन के एक नए दौर का शुभारम्भ हुआ। ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रसारित औपचारिक शिक्षा ने जनजातीय जीवन में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। (वर्मा, 2009 : 136)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी स्तर पर झारखण्ड में शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक विद्यालय तथा महाविद्यालयों की स्थापना की गयी। वर्तमान समय में झारखण्ड राज्य में राँची विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। इन विश्वविद्यालयों के अंतर्गत सभी महाविद्यालयों में 85% स्थान स्थानीय लोगों के नामांकन हेतु आरक्षित रहे हैं। सभी जनजातीय छात्रों की स्नातकोत्तर तक मुफ्त शिक्षा प्रदान किए जाने का प्रावधान रहा है। जनजातीय छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जाती रही हैं। जनजातीय छात्र–छात्राओं के लिए कई छात्रावास भी बनाये गये हैं। राज्य सरकार द्वारा झारखण्ड में कई जनजातीय आवासीय विद्यालय भी संचालित किए जाते रहे हैं। नवोदय विद्यालय की स्थापना से जनजातीय छात्र–छात्राओं को भी बेहतर शिक्षा का लाभ मिल रहा है। कल्याण विभाग, झारखण्ड सरकार के तत्वाधान में संचालित प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से जनजातीय युवक–युवतियों को सहायक श्रेणी, टंकण तथा आशुलिपि व राज्य लोक सेवा आयोग की परिक्षाओं के लिए प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध हो रही है। झारखण्ड के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं, पॉलिटेकनिक संस्थाओं अभियंत्रण महाविद्यालयों तथा मेडिकल कॉलेजों में भी जनजातीय छात्र–छात्राओं के लिए स्थान आरक्षित रहे हैं। (वर्मा, 2008 : 210)

2001 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड की साक्षरता दर 53.60 प्रतिशत (पुरूष 67.30% तथा महिला 38.90%) है। झारखण्ड प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद साक्षरता की दर कम होने की वजह से पिछड़ा राज्य है। सूचना तथा संचार क्रांति के युग में निरक्षता न केवल व्यक्तिगत प्रगति में बाधक है बल्कि इससे समाज का विकास भी अवरोधित होता है।

किसी समाज की तरक्की वहाँ के जन समुदाय की ज्ञान सम्पदा पर निर्भर करता है। ज्ञान की बुनियादी साधन साक्षरता है। साक्षरता के अभाव में ज्ञान अर्जित नहीं की जा सकती। (वर्मा, 2009:144)

निष्कर्ष :

जनजातियों के बीच शिक्षा को विकसित करने में ईसाई मिशनरियों के योगदान को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सरकार द्वारा दिए गए आरक्षण एवं चलना गए विभिन्न शिक्षा कार्यक्रम भी जनजातीय समुदाय को काफी लाभान्वित किया है। वर्तमान में उराँव जनजाति के सदस्य उच्च पदों (डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, आई.ए.एस या राज्य प्रशासनिक सेवा) पर आसीन हैं, परन्तु इनकी संख्या अत्यंत कम है। शैक्षणिक स्तर के वृद्धि के कारण एक ओर जहाँ इनके मनोवृत्ति में परिवर्तन देखा जा रहा है वहीं दूसरी ओर इनके बीच व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी विकास हुआ है। इनमें शिक्षा की गति धीमी है जिसका मुख्य कारण गरीबी, अपर्याप्त शैक्षणिक संस्थाएँ, शैक्षिक विषय–वस्तु व पाठ्यक्रम, शिक्षा का माध्यम, शिक्षकों की कमी इत्यादि है। जब तक इन अवरोधों को दूर नहीं किया जाएगा तब तक इनके बीच शिक्षा का पर्याप्त विकास नहीं होगा और वे राष्ट्र की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पायेंगे।

संदर्भ

1. महाजन, धर्मवीर (2009), सामाजिक मानवशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2. मदन, जी.आर. (2007), विकास का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7
3 पाण्डेय गया (2007), भारतीय जनजातीय संस्कृति, कंसैप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली–110059
4. सिंह अमृता (20014) स्त्री शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
5. वर्मा, उमेश कुमार (2008), जनजातीय समाजशास्त्र, जानकी प्रकाशन, पटना, नई दिल्ली
6. वर्मा उमेश कुमार (2009), झारखड का जनजातीय समाज, सुबोध ग्रन्थमाला, पुस्तक पथ, राँची 834001